ॐ जय शिव ओंकारा (शिवजी की आरती)

इन पाठों के बारे में

स्रोत	हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।
लिप्यन्तरण	रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

ॐ जय शिव ओंकारा (शिवजी की आरती)

प्रकार	आरती
देवता	भगवान शिव
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	शैव
स्रोत	गृहस्थ धर्म — सं. मनसुखराय मोर, कलकत्ता (1946 और 1950 मुद्रण) — 1946 printing, pages 74–75 (archive.org in.ernet.dli.2015.308604, leaves 269–270); 1950 printing pages 162–163 compared
आभार	पाठ गृहस्थ धर्म (सं. मनसुखराय मोर, कलकत्ता, 1946 मुद्रण), पृष्ठ 74–75 (archive.org स्कैन) से लिया और 1950 के मुद्रण तथा तीन बाद के आरती-संग्रहों से मिलाया गया। सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Traditional aarti in wide circulation, printed by 1946; public domain. Transcribed in-house from a public-domain scan of

जय शिव ओंकारा हर जै शिव ओंकारा ।

jay śiv oṃkārā har jai śiv oṃkārā |

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्धंगी धारा ॥

brahmā viṣṇu sadāśiv ardhaṃgī dhārā ||

एकानन चतुरानन पंचानन राजै ।

ekānan caturānan paṃcānan rājai |

हंसासन गरुड़ासन वृषभासन साजै ॥

haṃsāsan garuṛāsan vṛṣabhāsan sājai ||

जय शिव ओंकारा हर जै शिव ओंकारा ॥

jay śiv oṃkārā har jai śiv oṃkārā ||

दोयभुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहैं ।

doyabhuj cār caturbhuj daśabhuj te sohaiṃ |

तीन रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहैं ॥

tīn rūp nirakhatā tribhuvan jan mohaiṃ ||

जय शिव ओंकारा हर जै शिव ओंकारा ॥

jay śiv oṃkārā har jai śiv oṃkārā ||

अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी ।

akṣamālā vanamālā ruṇḍamālā dhārī |

चन्दनमृगमद चन्दा भाले शुभकारी ॥

candanamṛgamad candā bhāle śubhakārī ||

जय शिव ओंकारा हर जय शिव ओंकारा ॥

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

jay śiv oṃkārā har jay śiv oṃkārā ||

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे ।

śvetāmbar pītāmbar bāghambar aṃge |

सनकादिक प्रभुतादिक भूतादिक संगे ॥

sanakādik prabhutādik bhūtādik saṃge ||

जय शिव ओंकारा हर जय शिव ओंकारा ।

jay śiv oṃkārā har jay śiv oṃkārā |

कर मध्ये कमंडलु चक्र त्रिशुल धरता ।

kar madhye kamaṃḍalu cakra triśul dharatā |

जगकर्त्ता जगभर्त्ता जग संहार कर्त्ता ॥

jagakarttā jagabharttā jag saṃhār karttā ||

जय शिव ओंकारा हर जय शिव ओंकारा ।

jay śiv oṃkārā har jay śiv oṃkārā |

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।

brahmā viṣṇu sadāśiv jānat avivekā |

प्रणव अक्षरनु मध्ये ये तीनों एका ॥

praṇav akṣaranu madhye ye tīnoṃ ekā ||

जय शिव ओंकारा हर जय शिव ओंकारा ॥

jay śiv oṃkārā har jay śiv oṃkārā ||

त्रिगुणस्वामीजीकी आरती जो कोई नर गावै ।

triguṇasvāmījīkī āratī jo koī nar gāvai |

भगत शिवानन्द स्वामी, मन वांछित फल पावै ॥

bhagat śivānanda svāmī, man vāṃchit phal pāvai ||

जय शिव ओंकारा हर जय शिव ओंकारा ॥

jay śiv oṃkārā har jay śiv oṃkārā ||

अर्थ

पदों का भाव: तीनों रूपों के एक, चार और पाँच मुख हैं और हंस, गरुड़ और वृषभ उनके आसन हैं; दो, चार और दस भुजाएँ हैं, जिन्हें देख त्रिभुवन मोहित होता है; अक्षमाला, वनमाला और रुण्डमाला, चन्दन-कस्तूरी और भाल पर चन्द्रमा; श्वेत, पीत और बाघम्बर वस्त्र, संग में सनकादि, प्रभृति देव और भूतगण; हाथों में कमण्डलु, चक्र और त्रिशूल — वे ही जगत् के कर्ता, भर्ता और संहर्ता हैं; अविवेकी ब्रह्मा-विष्णु-शिव को अलग जानते हैं, पर प्रणव के भीतर ये तीनों एक हैं। अन्तिम पद में फल है — जो यह आरती गाये वह मनवांछित फल पाये; भणिता में शिवानन्द स्वामी का नाम है। यह संक्षिप्त भावार्थ है, अनुवाद नहीं।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।